

पिघलती बर्फ पर बैठा ध्रुवीय भालू

डॉ. चन्द्रशीला गुप्ता

यह कोई ज़्यादा पुरानी बात नहीं है जब ध्रुवीय भालू ठण्डक के सूचक हुआ करते थे लेकिन आजकल वे बढ़ती गर्मी के शिकार हो गए हैं। ध्रुवीय भालू पर परंपरागत खतरों (जैसे शिकार, प्रदूषण, समुद्र तटों पर खनन आदि) का स्थान अब नए खतरों ने ले लिया है। नया खतरा है कि उनके चारों ओर बर्फ पिघल रही है और वजह है इंसान।

यह नया खतरा भी बहुत नया नहीं है लेकिन दो बातें ऐसी हुई हैं जिसने ध्रुवीय भालू को संरक्षण में लोकप्रिय कर दिया है। आज वे विशिष्ट और लुप्तप्राय तथा फोटोजेनिक प्राणियों पाण्डा, डॉल्फिन, गोरिल्ला और व्हेल से ज़्यादा लोकप्रिय पोस्टर प्राणी हैं।

हुआ यूं कि इस दिसम्बर के अंत में अमेरिका के गृह सचिव ने वक्तव्य दिया कि संयुक्त राज्य अमेरिका की मत्स्य एवं वन्य जीव सेवा ने ध्रुवीय भालू को भी ज़ोखिमग्रस्त प्रजातियों की सूची में डालना तय किया है।

जनवरी में तीन माह की सलाह प्रक्रिया प्रारंभ की गई जिसमें विश्व भर के आर्क्टिक विशेषज्ञों को आमंत्रित कर सलाह मशविरा किया गया। यह एक शुभ संकेत है, वर्षों तक आंख चुराने के बाद वैश्विक तापमान वृद्धि को स्वीकृति है। अब राष्ट्रपति बुश के प्रशासन को मानना ही पड़ेगा, क्योंकि उन्हीं का एक विभाग ऐसे स्पष्ट व नाटकीय प्रभाव को स्वीकार चुका है।

ध्रुवीय भालू ने आज वह कर दिखाया है जो पर्यावरणविद वर्षों में नहीं कर पाए थे। उसने इस वैश्विक संकट के प्रति एक स्वीकृति दिलवाई है। अब मुहिम शुरू हुई। व्हाइट



हाउस के विरुद्ध तीन याचिकाएं दायर की गई हैं: एक ग्रीन पीस, दूसरी जैव विविधता केन्द्र व तीसरी प्राकृतिक संसाधन प्रतिरक्षा द्वारा। फिर फरवरी के प्रारंभ में जलवायु परिवर्तन पर एक अंतर्राज्यीय पैनल ने बढ़ते तापमान व घटती समुद्री बर्फ पर अपना फैसला सुनाया। ध्रुवीय भालू के लिए भी वकालत की गई। 600 वैज्ञानिकों ने मिलकर ग्लोबल वार्मिंग की सारी ज़िम्मेदारी मानव क्रियाकलापों पर डाली है।

वसन्त में बर्फ का जल्दी पिघलना व पतझड़ में बर्फ के जमने में देरी होना, ये दोनों बातें ही ध्रुवीय भालू के हित में नहीं हैं क्योंकि ये सीधे उनकी भोजन प्राप्त करने की क्षमता पर प्रभाव डालती है। प्रमाण मिले हैं कि कुछ क्षेत्रों में 30 वर्ष पहले जिस समय बर्फ पिघलती थी आजकल उससे तीन सप्ताह पहले पिघलने लगी है।

ध्रुवीय भालू आर्क्टिक इकोसिस्टम का आईना है, क्योंकि

यह वहां खाद्य जूखला के शीर्ष पर विराजमान है। अर्थात् आर्क्टिक इकोसिस्टम में क्या चल रहा है, यह उसका सूचक भी है।

विश्व प्रकृति निधि के अंतर्राष्ट्रीय आर्क्टिक प्रोग्राम के स्टीफन नोरिस का कहना है जब भी हम इस समस्या पर गौर करते हैं, यह पहले से भी ज़्यादा गंभीर नज़र आती है। सन 2004 में अनुमान था कि इस शताब्दी के अंत में उत्तरी ध्रुव पर गर्मियों में बर्फ नज़र नहीं आएगी लेकिन संयुक्त राष्ट्र भौमिकी सेवा ने सन 2006 में रिपोर्ट किया कि ऐसा संभवतः इस शताब्दी के मध्य में ही हो जाएगा यानी हमारे बच्चों के जीवन काल में ही।

ऐसे तो लंदन चिड़ियाघर में जब ध्रुवीय भालू खत्म होने लगे, तो सन 1985 में इस समझ का जन्म हुआ कि चिड़ियाघर के सम्राट के लिए वह सही जगह नहीं थी। लेकिन इस मामले को हम सन 1993 से शुरू करें जब शीतल पेय कोका-कोला के विश्व बाज़ार में प्रसार के लिए इस मासूम का चेहरा इस्तेमाल किया गया। कोला-भालू को दिखाते हुए संदेश यह था कि कोका भी इतना ही ठण्डा है व भालू के समान कोका भी प्यार फैलाता है।

उसी वर्ष अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण संघ के प्राकृतिक ध्रुवीय भालू विशेषज्ञ समूह के स्टिलिंग एवं एण्ड्रयू डेरोचर ने अपने शोध पत्र में पश्चिमी हडसन की खाड़ी में ध्रुवीय भालू की स्थिति को दयनीय बताया व उन्होंने बर्फ पिघलने के असामान्य तरीके भी देखे। छः वर्ष बाद फिर ऐसे ही प्रमाण पाए गए और तब से लगातार यही देखा जा रहा है कि आर्क्टिक के 15 में से 7 भालू समुदाय की स्थिति निरंतर बिगड़ रही है। प्रति वर्ष शावक ज़्यादा मर रहे हैं। वयस्क भालुओं का वज़न गिर रहा है (औसत वज़न सन 1980 में 650 पौण्ड से सन 2004 में 507 पौण्ड रह गया है)। स्वजाति भक्षण के मामले भी देखे जा रहे हैं। पश्चिमी हडसन की खाड़ी में इनकी आबादी सन 1990 में 1200 थी जो सन 2004 में 1000 रह गई। कुल मिलाकर ध्रुवीय भालुओं की संख्या 20,000 से 30,000 के बीच होने का अनुमान है और वैज्ञानिकों को यह चिंता सता रही है कि इनका अस्तित्व कब तक बना रह जाएगा।

इधर जैसे-जैसे भालुओं की संख्या कम हो रही है, आर्क्टिक पर पर्यटन बढ़ रहा है। पैकेज टूरर्स के पेम्पलेट्स में ध्रुवीय भालू का आकर्षण तो प्रमुख रूप से दिया ही जाता है। उससे भी बड़ा विज्ञापन है - चर्चिल में हेलिकाप्टर द्वारा उस क्षेत्र तक जाना व रेंगते हुए उन मांदों में घुसना जो मादा भालू खाली कर चुकी है।

संरक्षण की राह ज़रा फिसलनभरी है। सन 1970 से शिकार पर तो रोक है लेकिन तेल खनन पर एक दशक बाद विचार हुआ। दरअसल जलवायु परिवर्तन की बात उठाने के लिये पुख्ता सबूतों की ज़रूरत होती है। सन 2001 में विश्व प्रकृति निधि ने एक रिपोर्ट 'ध्रुवीय भालू ज़ोखिम में' जारी की थी। नोरिस बताते हैं हमें वैज्ञानिकों से यह कहलवाने में बड़ी मुश्किल आ रही थी कि 'हां यह सब एक दूसरे से जुड़ा हुआ है'। वजह यह थी कि उस समय इन सबको आपस में जोड़ने के लिए सांख्यिकीय अध्ययन पर्याप्त नहीं थे। अब हम कनाडा, अलास्का, नार्वे व रूस के अध्ययनों के बीच वैज्ञानिक कड़ियां जोड़ सकते हैं।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के महासागरीय भौतिकी के एक प्रोफेसर ने आर्क्टिक के समुद्री बर्फ व तटीय बर्फ में 40 प्रतिशत कमी देखी है। उनका अनुमान है सन 2040 से पहले ही गर्मियों में बर्फ लुप्त हो जाएगी। यदि हिमखण्ड किनारे से ज़्यादा दूर हो जाएं और भालू किनारे के नज़दीक मानकर (जैसा कि हमेशा से होता रहा था) तैरना शुरू कर दे, तो दूरी ज़्यादा होने से वह तैरते-तैरते थक जाएगा और डूब जाएगा। ऐसा उत्तरी अलास्का में होते देखा गया है।

लम्बे समय की निद्रा के पश्चात अब थोड़ी-सी जागरूकता आई है। मार्च को अमरीकी मत्स्य व वन्य जीव सेवा ने वाशिंगटन में एक जन सुनवाई रखी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ध्रुवीय भालू को लुप्तप्राय प्रजाति घोषित किया जाए। दो दिन बाद ही अलास्का में अंतिम बैठक आयोजित की गई।

ध्रुवीय भालू सदा से ही बेहद अनुकूलन रखने वाले स्वभाव के प्राणी हैं लेकिन मात्र अण्डों वगैरह से इसका पेट पूरा नहीं भर पाता है, सील के मांस व चर्बी के बिना यह देर तक नहीं रह सकता। सील के शिकार के लिए आवश्यक है

कि यह समुद्री बर्फ पर ही रहे। ऐसा नहीं है कि मात्र ध्रुवीय समुद्री बर्फ पिघलने से यह सील का शिकार नहीं कर पा रहा है। समस्या और गहरी है, सील को पर्याप्त मछली खाने को न मिल पाने से सील की संख्या में भी कमी आ रही है। मछली को छोटी मछली व छोटी मछली को काई न मिल पाने से पूरी जूखला खतरे में है।

सभी भालूओं में ध्रुवीय भालू एकमात्र मांसाहारी भालू है। पूरे वर्ष इसका एक समान क्रीम रंग इसे अपने बर्फीले माहौल में छुपने में सुविधाजनक होता है। इसकी गोल गर्दन भूरे या काले भालू से ज़्यादा लम्बी होती है। पैरों का तलवा बेहद फरदार होता है जिसकी बर्फ पर अच्छी पकड़ के साथ-साथ ठण्ड से बचाव भी होता है। अगले पंजे थोड़े जालीदार होते हैं व गर्दन एवं कंधे की मज़बूत पेशियां इसे तैरने में मदद देती है। इसकी लम्बाई 9 फीट तक पहुंच जाती है और मौसम के अनुसार भार 400-700 कि.ग्रा. होता है।

ये तैरते हिमखंडों पर बैठे-बैठे समुद्र में करीबन 300 कि.मी. दूर तक घूम आते हैं। इनकी यह सवारी अगर पिघल जाए तो तैरते-तैरते किनारे-किनारे लग जाते हैं। अतः समुद्र के बीच ये कहीं भी तैरते-घूमते नज़र आते हैं। वस्तुतः ये नज़दीक के किनारे पहुंचने की फिराक में रहते हैं। कई बार ये आंख व नाक पानी में डूबोकर तैरते हैं लेकिन इनका पसंदीदा तरीका श्वान पैडल है जिसमें सिर ऊपर रखकर तैरा जाता है।

एक भालू समुद्र में उतना ही असहाय है जितनी एक सील धरती पर। फिर भी यह जमीन पर ज़्यादा दूर (2-3 कि.मी. से अधिक) नहीं जाता है। एक समुद्र से दूसरे समुद्र पर जाने के लिए यह, जहां तक हो सके, समुद्र के किनारे-किनारे ही चलता है।

सील ही भालू का मुख्य भोजन है। भालू तट पर बैठकर

इनका इंतजार करते हैं। बर्फ में किए श्वसन छिद्र से सील जैसे ही सांस लेने ऊपर आती है, भालू झपटकर इन्हें ऊपर खींच लेते है। मांस से भी ज़्यादा करीब 13 कि.ग्रा. चर्बी एक बैठक में खा ली जाती है।

अप्रैल-मई माह में समागम होता है और दूर-दूर तक अकेली मादा को खोजते-फिरते नर नज़र आ सकते हैं। इस वक्त नर भालू के लिए दूसरे नर व मनुष्य भी बेहद असहनीय होते हैं।

सर्दियों में मादाएं बर्फ को खोदकर एक मांद बनाती है जिसमें जनवरी में बच्चे देती हैं। जन्म के समय नेत्रहीन व असहाय बच्चे चूहों से ज़्यादा बड़े नहीं होते। मां बच्चों के अपने पीछे चले आने लायक बड़े होने तक मांद नहीं छोड़ती है; भूखी रहकर वह शरीर में जमा चर्बी से ही काम चलाती है। गर्मियों की शुरुआत में शिशु बाहर निकलते हैं तथा आर्क्टिक खरहों से काम चलाते हैं। सर्दियों में जाकर ये सील का शिकार करना सीख पाते हैं।

चूंकि शिशु एक पूरे वर्ष मां के साथ रहते हैं, अतः प्रजनन प्रति दूसरे वर्ष ही संभव हो पाता है। इनकी कम संख्या की एक वजह यह भी है। एस्किमो भालू का शिकार करते हैं लेकिन इसका जिगर नहीं खाते। शार्क के समान इनके जिगर में भी विटा-ए की अधिकता है जो कि ज़हरीला होता है। भालू के प्राकृतिक शत्रु व्हेल व वॉलरस है।

ध्रुवीय भालू का वैज्ञानिक नाम अर्सस मेरिटिमस है। इसका विकास बड़ा नाटकीय माना जाता है। सारे अमेरिकन व युरोपीय स्तनधारियों से यह एक बात में अलग है; इसके हिमयुगीन जीवाश्म उपलब्ध नहीं है। हड्डियों के कुछ मामूली से चिन्ह मात्र प्राप्त हुए हैं, जो काफी नए (लगभग बीस हज़ार वर्ष पुराने) हैं। इनका उद्भव ग्रेज़ली भालू (वैज्ञानिक नाम अर्सस आर्क्टिस) से हुआ माना जाता है जिसके हिमयुगीन जीवाश्म प्राप्त है। (स्रोत विशेष फीचर्स)



स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं